शैक्षिक पर्यवेक्षण का महत्त्व

शिक्षण अधिगम की उन्नति के आधार

- शिक्षक के गुण में वृद्धि
- छात्र प्रवेश की उचित प्रक्रिया
- पाठ्यक्रम और अद्यतन पाठ्यक्रम
- शिक्षण की सही प्रणाली
- शैक्षणिक शिक्षण साधनों का प्रयोग
- संगठन-सम्बन्धी स्वस्थ्य पर्यावरण
- शिक्षकों के बीच एवं शिक्षक-छात्र के मध्य सकारात्मक मानव सम्बन्ध

शैक्षिक प्रशासन और पर्यवेक्षण, वर्तमान समय में एक सम्पूर्ण प्रक्रिया के रूप में विद्यालय संचालित करने हेतु समस्त जवाबदेही और प्रकार्य समाहित हैं। आधुनिक शैक्षिक विचारों में, पर्यवेक्षण प्रशासन का एक पहलू है, जो शिक्षण और अधिगम के क्रियाकलापों पर बल देता है। सैद्धान्तिक रूप से, शैक्षिक पर्यवेक्षण पिछले कुछ दशकों में अत्यधिक परिवर्तन के दौर से गुजरा है।

शैक्षिक पर्यवेक्षण के आधुनिक प्रत्यय के निम्नलिखित लक्षण हैं, जिन्हें विश्व के अधिकांश देशों में सहमति प्राप्त है

1. पर्यवेक्षण एक सेवा कार्य
2. पर्यवेक्षण एक प्रक्रिया के रूप में
3. पर्यवेक्षण एक प्रशासनिक कार्यों का समूह
4. पर्यवेक्षण एक नेतृत्व के रूप में

पर्यवेक्षण एक सेवा कार्य

शैक्षिक पर्यवेक्षण का मुख्य उद्देश्य अध्यापक को बेहतर कार्य करने में मदद करना है। प्रारम्भ में शैक्षिक पर्यवेक्षण को निरीक्षण रूप में देखा जाता था, जिससे यह पता करने का प्रयास किया जाता था कि अध्यापक अपना कार्य सन्तोषजनक रूप से कर रहे हैं या नहीं। यह एक व्यापक क्रियाकलाप है जिसका आशय उन समस्त परिस्थितियों से है, जो शिक्षण अधिगम को प्रभावशाली बनाने में योगदान करें।

यदि पर्यवेक्षक ऐसा करने में असफल होता है तो वह अपने पद के साथ न्याय नहीं करता। पर्यवेक्षक का कार्य अध्यापक की सहायता करना और मार्गदर्शन करना है ताकि अध्यापक बेहतर और अधिक प्रासंगिक तरीके से छात्रों को प्रोत्साहित कर सके।

साथ ही विद्यालय की परिस्थितियों में अनुकूलित हो सके, व्यक्तिगत और सामूहिक समस्याओं का समाधान कर सके, प्रासंगिक शिक्षण सामग्रियों का उपयोग कर सके एवं स्वयं को अद्यतन कर सके। शिक्षक और विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को बढ़ाने की आवश्यकता है। पर्यवेक्षक का कार्य शिक्षक की सम्पूर्ण क्षमता को बाहर लाना है। पर्यवेक्षक, प्रधानाचार्य, विशेषज्ञ, स्कूल का निरीक्षक, विभाग का प्रमुख या उप-कुलपति भी हो सकता है। इनका पर्यवेक्षक के रूप में कार्य शिक्षण-अधिगम परिस्थितियों को, हर सम्भव प्रयास द्वारा उन्नत करना है। पर्यवेक्षण सेवा कार्य के रूप में कुछ करने और मदद करने पर बल देता है एवं मात्र बैठकर सोचने, बात करने, निर्णय लेने और नियन्त्रण करने एवं गलतियों, अपर्याप्तता एवं समन्वयन के अभाव को दूर करने का विरोध करता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, पर्यवेक्षण स्वेच्छाचारी ढंग से शक्तियों का प्रयोग करना नहीं है, बल्कि यह अत्यधिक जिम्मेदारी भरा पद है।

वे समस्त कार्य जो शिक्षण अधिगम की प्रभावशीलता में वृद्धि करते हैं, वही समस्त कार्य पर्यवेक्षक के कार्य हैं। उल्लेखनीय है कि पर्यवेक्षक न केवल स्वयं की गतिविधियों को बल्कि सामूहिक गतिविधियों और प्रयासों को उन्नत करने में सहायक पहुँचाता है। ये समस्त गतिविधियाँ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उन्नत बनाती हैं। भारत में शिक्षण पर्यवेक्षण ने इन विशेषताओं को मात्र सैद्धान्तिक रूप से ही स्वीकार किया है, लेकिन वास्तविक रूप में पर्यवेक्षक के व्यवहार में ये विशेषताएँ नहीं दिखती हैं। मुश्किल से कुछ विद्यालयों के प्राचार्य या विभाग प्रमुख या विश्वविद्यालय के उप-कुलपति अपने व्यवहार में इन लक्षणों को प्रदर्शित करते हैं।

अधिकांश पर्यवेक्षक मात्र फाइल-उन्मुखी प्राधिकारी और प्रभाव को ध्यान में रखने वाले और नियम-विनियम का अनुपालन करने वाले होते हैं। एक नई समझ जिसका ऊपर वर्णन किया गया है, को पर्यवेक्षक द्वारा विकसित करना आवश्यक है।

पर्यवेक्षण प्रक्रिया के रूप में

आधुनिक पर्यवेक्षण सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक प्रक्रिया पर निर्भर करता है। शिक्षण अधिगम को बिना शिक्षक के गुणों में वृद्धि किए उन्नत नहीं किया जा सकता। पर्यवेक्षक और शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार में वृद्धि आवश्यक है। पर्यवेक्षक शिक्षक की व्यावसायिक वृद्धि को प्रोत्साहित करता है। वांछनीय ज्ञान, कौशल और अभिरुचि का उन्नतिकरण पर्यवेक्षक का प्रमुख कार्य है। यह कार्य सामाजिक सन्दर्भ में और सामाजिक प्रक्रिया के द्वारा सम्पादित किया जाता है। यह प्रक्रिया लोगों के विभिन्न प्रकारों द्वारा, लोगों के प्रति पर्यवेक्षक के व्यवहार द्वारा, संस्थान द्वारा किस प्रकार पुरस्कृत किए जाने द्वारा, संस्थान में समाज द्वारा निभाई जा रही भूमिका द्वारा प्रभावित होती है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक विकास और शिक्षण अधिगम का उन्नतिकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है। यदि यह कार्य शैक्षिक पर्यवेक्षण के रूप में है तो निश्चित रूप से यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।

पहले शैक्षिक पर्यवेक्षण को शिक्षक निरीक्षण के रूप में समझा जाता था। इस प्रत्यय के अनुसार, पर्यवेक्षण स्वेच्छाचारी, हठधर्मी और अव्यावहारिक होता था। शैक्षिक पर्यवेक्षण के आधुनिक उपागम अधिक लोकतान्त्रिक, अधिक मानव-सम्बन्ध उन्मुखी और अधिक नवप्रवर्तनशील हैं। यह सह-भाजन और टीमवर्क पर निर्भर करता है। यह मूलभूत अवधारणा है कि लोग केवल स्वयं ही अपने व्यवहार को परिवर्तित कर सकते हैं। अधिकांशतः यह अधिक प्रभावशाली तभी हो सकता है, जब यह सामाजिक प्रक्रिया के रूप में हो। सामाजिक अधिगम सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम है। यह शिक्षण अधिगम और विकास का आधार है, परिणामस्वरूप यह शैक्षिक पर्यवेक्षण के आधार पर कार्य करता है। आधुनिक शैक्षिक पर्यवेक्षण इस बात पर बल देता है कि पर्यवेक्षण ऐसी सामाजिक परिस्थितियों को निर्मित करे, जिसमें शिक्षक उन व्यावहारिक प्रवृत्तियों और कौशल का विकास कर सके, जो शिक्षण-अधिगम के गुणों में वृद्धि कर सकें।

पर्यवेक्षण के उपकरण

सामाजिक प्रक्रिया के रूप में पर्यवेक्षण में तीन प्रमुख उपकरणों पर जोर दिया जाता है

पारस्परिक व्यवहार लोगों के बीच पारस्परिक व्यवहार पर्यवेक्षण की सफलता सुनिश्चित करता है।

भागीदारी सामाजिक परिस्थितियों में भागीदारी शिक्षक के शिक्षण-अधिगम को बढ़ाती है।

संचार यह सामाजिक प्रक्रिया का एक भाग है।

सामाजिक प्रक्रिया अच्छे मानवीय सम्बन्ध के आधार का निर्माण करती है। यदि शिक्षक और अन्य लोग शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गम्भीरतापूर्वक प्रयास कर रहे हैं तो अच्छे मानवीय सम्बन्ध अत्यन्त आवश्यक घटक हैं। अतः आधुनिक पर्यवेक्षण अनिवार्यतः एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस दृढ़ विश्वास का विकास भारत के शैक्षिक पर्यवेक्षकों में करना होगा। आधुनिक पर्यवेक्षण में मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया भी शामिल है। शैक्षिक पर्यवेक्षण के पुराने प्रत्यय अत्यधिक गैर-मनोवैज्ञानिक थे और ये मनोविज्ञान के सर्व-स्वीकृत नियमों का उल्लंघन करते थे। आधुनिक पर्यवेक्षण, व्यावहारिक सुधार और व्यावहारिक तकनीकी के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है। शिक्षक और अन्य लोगों के अधिगम व्यवहार किस प्रकार नियन्त्रित और उपान्तरित (सुधारना) होते हैं, इसकी समझ प्रत्येक पर्यवेक्षक को होनी चाहिए।

वास्तव में, पर्यवेक्षण का आशय प्रोत्साहित करने और शिक्षक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने तथा अन्य जो शिक्षण-अधिगम के विकास में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में शामिल हैं, का विकास करने से है। पाठ्यक्रम निर्माण और नवीनीकरण, शिक्षण प्रणाली विज्ञान, सत्कार और मूल्यांकन, मानवीय रिश्तों और टकराव का मूल्यांकन, प्रभावशाली संचार कुछ प्रमुख कार्य हैं, जिनमें आधुनिक पर्यवेक्षक कार्य करता रहता है। इन सभी कार्यों में मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया शामिल है, इसलिए आधुनिक पर्यवेक्षण में, मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को समझ पर अधिक बल दिया जाता है जिससे पर्यवेक्षण के उपरोक्त पहलुओं के क्रियान्वयन के लिए आधार प्राप्त हो सके। आधुनिक पर्यवेक्षक शिक्षक की सहायता इस रूप में करना चाहता है कि व्यावहारिक रूप में शिक्षण अधिगम का प्रयोग कर सके। पर्यवेक्षक यह कैसे करता है? यह भी एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। शिक्षकों के अधिगम के लिए पर्यवेक्षकों को हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

यदि पर्यवेक्षण शिक्षक विकास के रूप में है तो शैक्षिक प्रक्रिया को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण और अधिगम रणनीति और प्रणालियों का विकास किया गया है, जिनका प्रयोग करके पर्यवेक्षक शिक्षक की क्षमताओं का विकास करते हैं। आधुनिक पर्यवेक्षक शिक्षकों के विकास के लिए कार्यशालाओं, संस्थाओं, सेमिनारों, समूह-विमर्शों, स्वतन्त्र अध्ययनों और स्कूल-भ्रमणों का प्रयोग करते हैं। शिक्षकों की व्यावसायिक वृद्धि के लिए पर्यवेक्षक शिक्षकों को अपने अनुभव प्रदान करते हैं। आधुनिक पर्यवेक्षण में सतत् शिक्षा शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है।

आधुनिक पर्यवेक्षक इन सुविधाओं को शिक्षकों को आन्तरिक रूप से उपलब्ध कराता है या शिक्षकों को इन गतिविधियों में भाग लेने हेतु भेजता है जो बाह्य अभिकरणों द्वारा आयोजित किए जाते हैं। बाह्य अभिकरण से आशय एस सी ई आर टी, एन सी ई आर टी राज्य के शैक्षिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों, शिक्षा विभाग आदि से है।

स्मार्ट फैक्ट्स

- **वुड का घोषणा-पत्र** (1854) के अनुसार, प्रत्येक राज्य में एक डायरेक्टर ऑफ पब्लिक निर्देशक की नियुक्ति हुई थी। इन डायरेक्टरों के लिए शिक्षा की स्थिति का सही चित्र प्रस्तुत करने के लिए दोष इन्स्पेक्टरों की आवश्यकता सुझाई गई। इन्स्पेक्टर का कार्य एक प्रकार से नियमों को लागू करने तथा त्रुटियों का निर्धारण करने के लिए ही हुआ था।
- 1882 ई में हण्टर कमीशन के अनुसार, इन्स्पेक्टर का कार्य यह देखना था कि जो अनुदान सरकार की ओर से दिया जा रहा है, उसका उपयोग किस सीमा तक समुचित रूप से हो रहा है।
- 1922 में बर्टन ने निरीक्षण के महत्व पर अधिकाधिक ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने शिक्षा सुधार कार्यक्रमों में इसे महत्वपूर्ण माना है।
- वर्ष 1919 में सेडलर कमीशन ने निरीक्षण की आलोचना करते हुए कहा कि अधिकांश निरीक्षण जल्दबाजी में होता है तथा महत्वपूर्ण सम्बन्धों से रहित होता है।

पर्यवेक्षण एक प्रशासनिक कार्यों का समूह

आधुनिक पर्यवेक्षण की व्याख्या प्रशासनिक कार्यों के समूह के रूप में भी की जाती है। विल्स के अनुसार, पर्यवेक्षण सेवा के रूप में है जो शिक्षक को बेहतर कार्य करने में मदद करता है। अनरूह और टर्नर के अनुसार, पर्यवेक्षण को तकनीकी सेवा प्रदान करने के रूप में देखा जाता है, जिनका सम्बन्ध अधिगम और छात्रों की वृद्धि से है। इस दृष्टिकोण से देखने पर यह प्रतीत होता है कि पर्यवेक्षण कुछ प्रकार्यों को क्रियान्वित करता है।

अनरूह और **टर्नर** के अनुसार, संकाय और कर्मचारी वर्ग को [illegible] प्रदान करना पर्यवेक्षण का प्रमुख प्रकार्य है। इसका आशय है कि [illegible] अन्य लोगों के शिक्षण-अधिगम में मदद करना। इसमें शिक्षण को एक [illegible] गतिविधि के रूप में समझा जाए, जिसमें कई गतिविधियाँ आपस में [illegible] और प्रकार्यात्मक रूप से जुड़ी हुई हैं। शिक्षक और अन्य सभी [illegible] शिक्षण-अधिगम से जुड़े हैं, उन्हें शिक्षा और अधिगम का एक [illegible] और स्कूल का समाज, छात्र और अभिभावकों के साथ सम्बन्धों को [illegible] करना पर्यवेक्षक का कार्य है। *अधिगम परिस्थितियों को उन्नत करने* [illegible]

- शिक्षकों के साथ कार्य करना।
- शिक्षकों की व्यावसायिक उन्नति में मदद करना।
- अनुदेशन और अधिगम के लिए सामग्रियों का विकास करना।
- पाठ्यक्रम का उन्नतीकरण करना और उसे सेवारत अध्यापक [illegible] अन्य लोगों के लिए व्यवस्थित करना।
- राज्य, जिला एवं नगरों के अनुदेशन सेवाओं के बीच समन्वीकरण।
- मूल्यांकन का उन्नतीकरण।
- समस्याओं का अध्ययन।
- नई योजनाओं और निर्णयों का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन।
- शिक्षकों के लिए पुरस्कार प्रणाली का प्रबन्धन।
- शिक्षकों को उनकी भूमिका समझने में मदद करना अन्यों [illegible] शिक्षण-अधिगम के सन्दर्भ में भूमिका समझाने में मदद करना।
- संकाय और कर्मचारी वर्ग के बीच पारस्परिक व्यवहार को सुगम [illegible]
- संकाय और कर्मचारी वर्ग को दूरदर्शिता प्रदान करना।

पर्यवेक्षण एक नेतृत्व के रूप में

शिक्षा में आधुनिक शैक्षिक पर्यवेक्षण को नेतृत्व के एक प्रकार के [illegible] देखा जाता है। पूर्व समय में, पर्यवेक्षण केवल सत्ताधारी या रुतबे के पद के [illegible] देखा जाता था। आज पर्यवेक्षक सत्ताधारी या रुतबे के पद के रूप में कार्य [illegible] वह अर्थहीन हो जाएगा, क्योंकि लोकतान्त्रिक समाज में जनता अपने [illegible] और स्वतन्त्रता के प्रति अधिक जागरूक है और वे शक्ति या प्राधिकार द्वारा [illegible] में नहीं लाए जा सकते। एक पर्यवेक्षक जो लोकतान्त्रिक तरीके से अपने [illegible] नहीं निभाएगा, वह अधिक समय तक सफल नहीं हो सकता और न ही [illegible] अस्तित्व बनाए रख सकता है, इसलिए, वर्तमान समय में पर्यवेक्षण ही नेतृत्व [illegible] पहले निरीक्षण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था, अब पर्यवेक्षण का भाग भी नहीं है। [illegible] यह अनुभव किया जाता है कि शिक्षण-अधिगम का गुणात्मक विकास निरीक्षण द्वारा सम्भव नहीं है।

लोकतान्त्रिक समाज में शिक्षित करने की, सीखने की, परीक्षण करने [illegible] नव परिवर्तन करने की स्वतन्त्रता अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। अतः [illegible] व्यावसायिक प्रभाव को पर्यवेक्षक के नेतृत्व गुणों से निकाल दिया गया [illegible] आधुनिक पर्यवेक्षण पर्यवेक्षक के नेतृत्व गुणों के प्रकार्य के रूप में है। नेतृत्व [illegible] गुणों से तात्पर्य है, समूह की आवश्यकताओं को पहचानना और उसे पूरा [illegible] स्वीकारात्मक तरीके से व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील, [illegible] कार्य और व्यक्तिगत कार्यों को सुगम बनाना और सहयोगात्मक व्यवहार [illegible] आधुनिक पर्यवेक्षण केन्द्र सकारात्मक मानव सम्बन्ध और प्रभावशाली [illegible] लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करते हैं। यह पर्यवेक्षक के पारस्परिक व्यवहार [illegible] द्वारा ही सम्भव है। इस कौशल में, नियोजन कौशल, संगठन सम्बन्धी [illegible] संचार कौशल, प्रतिनिधि कौशल और मूल्यांकन कौशल शामिल हैं। इस [illegible] आधुनिक शैक्षिक पर्यवेक्षण अनुदेशन नेतृत्व है। फेन्सेथ के शब्दों में, "[illegible] पर्यवेक्षण नेतृत्व की भाँति दिखाई देता है, यह कर्मचारी को सतत् प्रोत्साहित [illegible] है जिससे विद्यालय के कार्यक्रमों को सर्वाधिक प्रभावशाली बनाता है।"

आधुनिक पर्यवेक्षण

परम्परागत रूप से शैक्षिक पर्यवेक्षक शिक्षक के निरीक्षक के रूप में देखे जा सकते थे। ये पर्यवेक्षक पूर्णत: नियोजित नहीं होते थे और स्वेच्छाचारी होते थे। इनके विपरीत आधुनिक पर्यवेक्षक शिक्षण अधिगम पर्यावरण के अनुसन्धान और विश्लेषण पर आधारित होते हैं। आधुनिक पर्यवेक्षक वस्तुनिष्ठ, व्यवस्थित, लोकतान्त्रिक, रचनात्मक, बुद्धि-केन्द्रित, उत्पादक, अनुसन्धानिक तरीके से कार्य-पद्धति पर जोर देने वाले होते हैं। वे सतत् मूल्यांकन पर बल देते हैं। आधुनिक पर्यवेक्षण में लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों को महत्त्व एवं प्राथमिकता दी जाती है।

परम्परागत एवं आधुनिक पर्यवेक्षण में पारस्परिक अन्तर

क्र.सं.	परम्परागत पर्यवेक्षण	आधुनिक पर्यवेक्षण
1.	केवल निरीक्षण पर आधारित।	अध्ययन, विश्लेषण पर आधारित
2.	शिक्षा केन्द्रित अधिक।	शिक्षण, शैक्षिक सामग्री, विधि, छात्र, मूल्यांकन केन्द्रित
3.	अकस्मिक निरीक्षण में विश्वास।	सुनिश्चित तथा अनौपचारिक पर्यवेक्षण की योजना
4.	आलोचना की प्रचुरता तथा सुधारात्मक नहीं।	सुझावात्मक, सहयोगात्मक एवं शिक्षक के लिए अधिक प्रोत्साहन
5.	अनियमित, अव्यवस्थित एवं योजना रहित।	निश्चित, व्यवस्थित तथा योजनाबद्ध
6.	केवल प्रशासन से सम्बन्धित।	प्रशासन के अतिरिक्त समुदाय से भी सम्बन्धित
7.	समस्याओं के प्रति अनास्था।	समस्या समाधान हेतु जागरूक

यू एस ए में आधुनिक पर्यवेक्षण की प्रवृत्तियाँ सैद्धान्तिक और व्यावहारिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, परन्तु हमारे देश में यह केवल मात्र सैद्धान्तिक रूप में ही स्वीकृत है। व्यावहारिक रूप किसी भी राज्य में नजर नहीं आता है। भारत में आज शैक्षिक पर्यवेक्षण रूपों में कुछ दशक पुराने परम्परागत रूप को ही धारण किए हुए है। शैक्षिक पर्यवेक्षक के प्रशिक्षण और अभिविन्यास सम्बन्धी प्रावधान भारत में नहीं बनाए गए हैं। जहाँ कहीं भी शैक्षिक पर्यवेक्षक बिना किसी प्रशिक्षण के कार्य कर रहे हैं, वहीं शैक्षिक पर्यवेक्षक की अर्हता शिक्षक के समान ही है। अत: पर्यवेक्षक से बेहतर अन्तर्दृष्टि की उम्मीद नहीं की जा सकती।

आधुनिक पर्यवेक्षण का उद्देश्य पर्यवेक्षण का उद्देश्य अधिगम कार्यक्रम को उन्नत करना है। शिक्षक पर ध्यान देने के स्थान पर सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम परिस्थितियों पर ध्यान दिया जाता है और उसे उन्नत करने का प्रयास किया जाता है। यह लोकतान्त्रिक व्यवसायिक नेतृत्व प्रदान करता है, जो शिक्षक को उनका कार्य बेहतर ढंग से करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आधुनिक पर्यवेक्षण की प्रकृति आधुनिक पर्यवेक्षण सहकारी प्रयत्न अनुसन्धानात्मक उपागम है। विलेस के अनुसार, पर्यवेक्षण नेतृत्व, मानवीय- सम्बन्ध, समूह-प्रक्रिया, कर्मचारी सम्बन्धी प्रशासन और मूल्यांकन में कौशल है।

आधुनिक पर्यवेक्षण का क्षेत्र पहले पर्यवेक्षण का कार्य मात्र कक्षाओं का निरीक्षण करना और अध्यापकों की श्रेणी निर्धारित करना होता था। वर्तमान में, पर्यवेक्षण का कार्यक्षेत्र बढ़कर सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम परिस्थितियों को उन्नत करने से हो गया है। अत: यह छात्र, शिक्षक, पाठ्यक्रम और सामाजिक-भौतिक पर्यावरण और उनके विकास से जुड़ा हुआ है।

आधुनिक शैक्षिक पर्यवेक्षक की विशेषताएँ

- सहयोग की भावना।
- रचनात्मक।
- नेतृत्व की क्षमताओं के विकास में सहायक।
- नवीन विधि, अनुसन्धान एवं आयाम हेतु सहायक।
- शिक्षण सेवा पर आधारित।
- समस्या समाधान हेतु अधिक जागरूक।
- अधिक जनतान्त्रिक तथा अभिवृत्यात्मक।
- वस्तुनिष्ठ तथा अधिक प्रभावशाली।
- अधिकाधिक एकीकृत तथा समन्वयकारी।
- वैज्ञानिक विधि।

आधुनिक पर्यवेक्षण का मूल उद्देश्य शिक्षक की सहायता करना ही है। इसके अलावा कक्षा भवन का पर्यवेक्षण, पाठ्यक्रम विस्तार, मूल्यांकन एवं परीक्षा, बालक का मनोवैज्ञानिक अध्ययन आदि कार्यों में सुधार करना भी वर्तमान पर्यवेक्षण का मुख्य कार्य है। आधुनिक पर्यवेक्षण की मूलभूत विशेषता सहयोग की भावना है। आधुनिक पर्यवेक्षण की विशेषताएँ जनतान्त्रिक प्रणाली के अनुकूल हैं। इस प्रकार के पर्यवेक्षण द्वारा छात्रों तथा अध्यापकों के व्यक्तित्व का अधिक विकास किया जा सकता है।

स्मार्ट फैक्ट्स

- माध्यमिक शिक्षा आयोग ने वर्ष 1952 में कहा कि निरीक्षक अकादमिक अर्हता उच्च (ऑनर्स या मास्टर डिग्री) और दस वर्ष का विद्यालय में अध्यापक शिक्षा अनुभव या उच्च विद्यालय के प्रधान अध्यापक के रूप में तीन वर्ष का अनुभव होना चाहिए।
- वर्ष 1956 के यूनेस्को की जेनेवा कॉन्फ्रेन्स में कहा गया निरीक्षक की नियुक्ति उनके गुणों के आधार पर की जानी चाहिए एवं कुल, वंश, लिंग, विश्वास और सामाजिक मूल के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- वर्ष 1964-66 के शिक्षा आयोग के अनुसार, प्रशासन को पर्यवेक्षण से पृथक् करने की सलाह दी।
- शिक्षा आयोग, 1964-66 ने कहा—पर्यवेक्षण दो प्रकार का होना चाहिए 1. वार्षिकी, 2. त्रैवार्षिकी
- वर्ष 1934 में **वुड** तथा **अबोर** को ब्रिटिश सरकार ने भारतीय विद्यालयों का निरीक्षण करने भेजा था

शैक्षिक पर्यवेक्षण के कार्य

कार्यों की उचित गति ही उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होती है। शैक्षिक पर्यवेक्षण के कार्य शैक्षिक उन्नति के लिए सहायक होते हैं, जो कार्य करने योग्य होते हैं, इन्हें ही कार्य कहा जाता है। अत: कार्यों के अभाव में अथवा कार्यों की गति रुक जाने से छोटा या बड़ा किसी प्रकार का संगठन या प्रशासन असफल हो जाता है। *शैक्षिक पर्यवेक्षण के प्रमुख कार्यों का अध्ययन इस प्रकार है*

नेतृत्व प्रदान करना

शैक्षिक पर्यवेक्षण का मुख्य कार्य नेतृत्व का प्रशिक्षण समझा जाता है। लोकतन्त्र में तो नेतृत्व की नितान्त आवश्यकता होती है। कोई भी पर्यवेक्षण सम्पूर्ण उत्तरदायित्व का वहन स्वयं अकेला होकर नहीं करता। वह अपनी सहायतार्थ अन्य सह-नेताओं का भी चयन करता है, जिससे उसके कार्य में सुविधा होती है तथा अन्य व्यक्तियों को भी नेतृत्व करने के अवसर मिलते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में उचित नीतियों का निर्धारण करना शैक्षिक पर्यवेक्षण का महत्त्वपूर्ण कार्य है। नीति-निर्धारण में यद्यपि जनता में मत को प्रमुख श्रेय दिया जाना चाहिए, परन्तु भारतवर्ष जैसे विकासशील देश में जहां जनता को अभी प्रजातान्त्रिक पद्धति के लिए अभ्यस्त कराया जा रहा हो, शैक्षिक नीति-निर्धारण का कार्य नहीं सौंपा जा सकता, इसलिए शैक्षिक पर्यवेक्षण का यह कार्य और भी अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण है। शिक्षा वास्तव में एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। व्यक्तियों की शक्तियों तथा योग्यताओं का उचित विकास तथा समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल ही शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था करना शिक्षा का महान् उद्देश्य हुआ करता है। शिक्षा के उद्देश्यों तथा लक्ष्यों का निर्माण करने तथा शिक्षा की योजना में सामाजिक आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है। समाज के व्यक्तियों द्वारा अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जाती है। [illegible] सरकारें भी शिक्षा पर धनराशि व्यय करती है तथा शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक एवं प्रशासक शैक्षिक उन्नति के लिए पूर्ण प्रयास करते हैं, परन्तु इन सभी व्यक्तियों का प्रयास निष्फल तथा प्रभावहीन हो जाएगा यदि शिक्षा के क्षेत्र में उचित एवं लाभकारी नीतियों को निर्धारित नहीं किया जाता। पर्यवेक्षण का नीति-निर्धारण करने का कार्य इतना सुनिश्चित होना चाहिए, जो किसी भी संस्था अथवा संगठन के लिए उचित मार्ग निर्देशन दे सके।

स्मार्ट फैक्ट्स

- आचार्य नरेन्द्र देव के प्रतिवेदन में निरीक्षकों के कार्यों को अति परम्परागत तथा मशीनी बताया गया था।
- राष्ट्रीय कमिशन 1970 की अनुशंसा जिला शिक्षा अधिकारी की भूमिका एवं प्रकार, भर्ती एवं प्रशिक्षण से सम्बन्धित है।
- नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन ने भारत में निरीक्षण के दोषों को दूर करके इसे अधिक उपयोगी बनाने के लिए सम्पूर्ण अध्ययन-अध्यापन की परिस्थिति का विश्लेषण करके हर क्षेत्र के लिए प्रस्तावलियाँ तैयार की हैं।

व्यक्तियों की कार्यक्षमता में वृद्धि

शैक्षिक पर्यवेक्षण की सम्पूर्ण गतिविधि शिक्षकों के शिक्षण कार्य को उन्नत बनाती है। शिक्षण संस्थाओं में यद्यपि शिक्षकों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी कार्य में लगे रहते हैं तथापि शैक्षिक पर्यवेक्षण का मुख्य कार्य शिक्षकों को परामर्श देना, शिक्षण अवस्थाओं में सुधार करना तथा शिक्षण सामग्री को उन्नत बनाना ही समझा जाता है। आधुनिक पर्यवेक्षण का मुख्य उत्तरदायित्व शिक्षकों की योग्यताओं का विकास करना माना जाता है। शिक्षक के लिए उनकी अधिकाधिक उपयोगिता क्या और किस प्रकार सम्भव हो सकती है? इसका सही निर्देशन शैक्षिक पर्यवेक्षण ही दे सकता है। शैक्षिक पर्यवेक्षण अध्यापकों को इस प्रकार की नेतृत्व शक्ति प्रदान करता है जिससे वे व्यावसायिक कुशलता को प्राप्त करते हैं और शिक्षण संस्थाओं की दशाओं में सुधार करते हैं। फिर भी अध्यापकों में यह व्यावसायिक कुशलता तथा शिक्षण योग्यता तब तक अंकुरित नहीं होती, जब तक उनमें आत्मबोध की भावना और जिज्ञासा उत्पन्न न हो। वास्तविक आवश्यकता तथा जिज्ञासा के कारण व्यक्ति कुछ करने या सीखने के लिए विवश होता है। शैक्षिक पर्यवेक्षण शिक्षकों में जिज्ञासा को अंकुरित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। इस सम्बन्ध में **बार बर्टन** तथा **ब्रूकर** का यह कथन दृष्टव्य है

"इस प्रकार उत्तम शिक्षा पर्यवेक्षण वही होता है, जिसमें अध्यापक अधिकाधिक कार्य करते हैं अथवा जिसमें शिक्षक आलसी एवं सुस्त न होकर अधिक जागरूक रहते हैं।"

मानवीय सम्बन्धों में सुधार

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास उस पर्यावरण पर [illegible] होता है, जहाँ उसे जीवन व्यतीत करना होता है। परिवार के प्रेम, [illegible] उदारता, परोपकार आदि मानवीय गुणों को जिस व्यक्ति ने सामीपता से [illegible] गुण उस व्यक्ति में स्वमेव आ जाते हैं। इसके अलावा परिवार एवं [illegible] व्याप्त परिस्थितियाँ व्यक्ति को निराश, उदास एवं शिथिल बनाती हैं जिससे [illegible] समाज के प्रति कुण्ठाग्रस्त हो जाता है। किसी संस्था या समाज में रहकर [illegible] प्रेम, सम्मान तथा सहानुभूति की भावना को प्राप्त करता है। इससे उसके [illegible] में सुरक्षा और आत्मविश्वास जागृत हो जाता है। समूह के प्रत्येक व्यक्ति [illegible] उपचार किया जा सकता है तथा समूह के सभी कार्यों को उन्नत किया [illegible] है। शिक्षा पर्यवेक्षण का मुख्य कार्य शैक्षिक क्षेत्र में लगे हुए सभी व्यक्तियों [illegible] प्रति उत्तम मानवीय सम्बन्ध की भावना को प्रदर्शित करना है।

समूह के अन्तःक्रिया सम्बन्धों में सुधार

शिक्षा पर्यवेक्षण का कार्य समूह के सभी व्यक्तियों को इस प्रकार [illegible] करना है जिससे वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति में प्रत्येक व्यक्ति का पूर्ण [illegible] प्राप्त हो सके। शैक्षिक पर्यवेक्षक को समूह के व्यक्तियों में इस प्रकार की [illegible] उत्पन्न करनी चाहिए जिससे एक-दूसरे को निकटता से जान सकें [illegible] एक-दूसरे की कार्यक्षमता का भी ज्ञान हो सके। अन्तःक्रिया सम्बन्धों [illegible] करने के लिए पर्यवेक्षक को कुछ विशेष बातों की ओर ध्यान आकर्षित [illegible] चाहिए; यथा-समूह के व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति ऐसा आचरण करें [illegible] आदर भाव में वृद्धि हो सके तथा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के उत्तम कार्यों [illegible] प्रशंसा कर सके। समूह के समस्त कार्यों के निर्णयों में सभी व्यक्तियों का [illegible] लिया जाना चाहिए। जो भी निर्णय लिए जाएँ उनके प्रति समूह के व्यक्ति पूर्ण [illegible] आस्था प्रकट करें। आन्तरिक (शिक्षक) तथा बाह्य (समुदाय) [illegible] उद्देश्यों एवं मत, विचारों को निर्णय लेते समय प्राथमिकता देने का प्रयत्न [illegible] जाना चाहिए। समूह का प्रत्येक व्यक्ति विचाराभिव्यक्ति हेतु स्वतन्त्र [illegible] चाहिए। सभी सदस्यों को किए जाने वाले कार्यों का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए [illegible] यह भी विश्वास होना चाहिए कि असाधारण परिस्थिति के आ जाने पर [illegible] अनावश्यक कारणों के उत्पन्न होने पर सभी सदस्यों की इच्छानुसार कार्यक्रम [illegible] में परिवर्तन किया जा सकता है। सारांश यह है कि समूह के सदस्यों तथा [illegible] पर्यवेक्षक के बीच किसी प्रकार के सारांश, अविश्वास अथवा धोखे को दूर [illegible]

शिक्षा अधिगम व्यवस्था का अध्ययन

शिक्षा पर्यवेक्षण का क्षेत्र आधुनिक युग में अत्यन्त उत्तम है। पूर्व में [illegible] कक्षाओं का निरीक्षण, शिक्षकों का छिद्रान्वेषण, आर्थिक अनुदानों का [illegible] का निरीक्षण, शिक्षा के सम्बन्ध में सामान्य निर्देशन देना ही पर्यवेक्षण का [illegible] समझा जाता था, परन्तु आधुनिक पर्यवेक्षण की दृष्टि छात्र-शिक्षक [illegible] पाठ्यपुस्तक शिक्षण सामग्री, मूल्यांकन पाठ्यसहगामी तथा पाठ्येतर क्रियाओं [illegible] ओर रहती है। सीखने वाले छात्र तथा सिखाने वाले शिक्षक की [illegible] अवस्थाओं में सुधार करने का उत्तरदायित्व भी पर्यवेक्षक का ही होता है।

शिक्षण अधिगम व्यवस्थाओं में सुधार

शिक्षण अधिगम की समस्त अवस्थाओं का अध्ययन करने के उपरान्त शैक्षिक पर्यवेक्षण इस दिशा में आवश्यक सुधार करने योग्य बनता है। अन्य [illegible] सहयोगियों का सहयोग प्राप्त करके शैक्षिक पर्यवेक्षक शिक्षण अधिगम की अवस्थाओं में पर्याप्त सुधार कर सकता है। वर्तमान युग में शिक्षण अधिगम की अवस्थाओं में पर्याप्त सुधार कर सकता है। *वर्तमान युग में शिक्षण तथा अधिगम के तीन स्तरों को निरन्तर दृष्टि में रखा जाता है, ये स्तर हैं*

1. स्मृति स्तर 2. बोध स्तर 3. चिन्तन स्तर

आज केवल छात्रों को कुछ सामग्री कण्ठस्थ कराना ही पर्याप्त नहीं है अपितु उनकी बुद्धि में इस प्रकार वृद्धि करना आवश्यक समझा जाता है जिससे वे अधिक चिन्तनशील तथा सर्जनात्मक बन सकें। ऐसा बनने हेतु परम्परागत पाठ्यक्रम पर ही आश्रित नहीं रहा जा सकता, इसके लिए पाठ्यक्रम के नवीन पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित करना पड़ता है। पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित तथा अनुभव केन्द्रित होना चाहिए, जिससे बालकों की निरन्तर उन्नति हो सके। पाठ्यक्रम में जो बातें छात्रों के पूर्व अनुभवों में व्याप्त है उन्हीं के आधार पर नवीन ज्ञान देना श्रेयस्कर होता है। पाठ्यक्रम में भी इसी बात का ध्यान रखा जाना चाहिए।

पर्यवेक्षक की जागरूकता

पर्यवेक्षक को निम्नलिखित बातों की ओर सदैव जागरूक रहना पड़ता है

- क्या विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक है?
- क्या शिक्षा की प्रक्रिया शिक्षा को पूँजी मानने के लक्ष्य में सहायता कर रही है?
- क्या विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा उत्पादन कार्यों में सहायक सिद्ध हो सकती है?
- शिक्षकों का प्रभावशाली शिक्षण छात्रों के ज्ञानार्जन में कहाँ तक सहायक है?
- शैक्षिक प्रक्रिया में नवीन आयाम किसी सीमा तक शिक्षा की गुणात्मकता बढ़ाने में सहायक हैं।

शैक्षिक उत्पादन में वृद्धि

किसी भी देश के महान् उद्देश्यों की प्राप्ति शिक्षा के माध्यम से ही की जाती है। शिक्षा के उद्देश्य राष्ट्र के उद्देश्यों से पृथक् नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों की सर्वांगीण उन्नति में विश्वास रखता है, शिक्षा का उद्देश्य भी छात्रों की शक्तियों तथा योग्यताओं को विकसित करना समझा जाता है। शिक्षा ही भावी नागरिकों को इस योग्य बनाती है जिससे वे समाज के कार्यों में कुशलतापूर्वक भाग ले सकें। शैक्षिक पर्यवेक्षण के सभी उद्देश्यों में यही बात मूलरूप से निहित होती है, शैक्षिक पर्यवेक्षण शिक्षण प्रक्रिया का सदैव मूल्यांकन करता रहता है।

पर्यवेक्षण कार्य सुधार

शिक्षा पर्यवेक्षण के समस्त कार्य शिक्षण संस्थाओं की उन्नति तथा शैक्षिक प्रक्रिया के स्तर में वृद्धि करने के लिए आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण होते हैं। शिक्षा पर्यवेक्षण वास्तव में शिक्षा प्रक्रिया की उन्नति का मूलाधार है। कभी-कभी कार्याधिक्य के कारण शिक्षा पर्यवेक्षण भी यदा-कदा भटक सकता है, इसलिए स्वयं निर्देशक को भी सदैव स्व-नियन्त्रण तथा स्व-निर्देशन का चलन अवश्य करना चाहिए और पर्यवेक्षण के सम्पूर्ण कार्य को उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए शैक्षिक पर्यवेक्षक को अधिक सजग रहने की आवश्यकता होती है। स्वयं पर नियन्त्रण उन्नति की दिशा में निरन्तर अग्रसर होना है।

पर्यवेक्षण कार्यक्रम का नियोजन एवं क्रियान्वयन

किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक लागू करने एवं उससे सम्बन्धित अपेक्षित लाभ प्राप्ति हेतु उसका नियोजन करना अनिवार्य होता है। *पर्यवेक्षण कार्यक्रमों का नियोजन निम्नलिखित आवश्यकताओं के आधार पर किया जाता है*

1. शिक्षक के कार्यों में सुधार
2. विद्यालय की अन्तर्क्रिया में सुधार करना
3. शैक्षिक नीतियों का निर्धारण
4. शिक्षकों के निरन्तर विकास में सहायता
5. शिक्षक वर्ग की तकनीकी सहायता
6. नवीन शिक्षण विधियों व सामग्री का विकास
7. व्यावसायिक समस्याओं का निराकरण
8. कक्षा-शिक्षण को उन्नत व प्रभावशाली बनाना
9. शैक्षिक कार्यकर्ताओं की कार्यक्षमता में सुधार

पर्यवेक्षण कार्यक्रम का क्रियान्वयन

1. **कार्य का मूल्यांकन** शैक्षिक पर्यवेक्षण में व्यक्ति की कार्यक्षमता का ज्ञान अवश्य किया जाना चाहिए। कौन शिक्षक कितना और किस प्रकार कार्य कर रहा है अथवा विद्यालय का अनुशासन किस दिशा में मोड़ ले रहा है इन सभी बातों का शैक्षिक पर्यवेक्षण में सही मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
2. **उद्देश्यपूर्ति तथा सहयोग से सम्बन्धित** शैक्षिक पर्यवेक्षण किसी उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए। पर्यवेक्षण के कार्य में सभी सहकर्मियों का होना आवश्यक है।
3. **सम्पूर्ण विकास से सम्बन्धित** शैक्षिक पर्यवेक्षण के नियम निर्धारण में यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि शैक्षिक पर्यवेक्षण न केवल शिक्षण-प्रक्रिया का विकास करने वाला हो अपितु विद्यालय भवन, छात्रावास, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल के मैदान, व्यायामशाला आदि सभी के विकास से होना चाहिए।
4. **जनतन्त्रात्मक नीतियों पर आधारित** वर्तमान समय में आधुनिक पर्यवेक्षण के नियमों में जनतन्त्रात्मकता का नियम सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक उपयोगी समझा जाता है। जनतन्त्रात्मक शैक्षिक पर्यवेक्षण की रचना इस ढंग से की जानी चाहिए ताकि समस्त सहकर्मियों की उचित बातों को सुना जा सके।

   इसके अन्तर्गत निम्न बातें मुख्य हैं

   (i) सभी सहकर्मियों को समान स्तर और सम्मानजनक समझना।
   (ii) सभी सहकर्मियों को विचार और कार्य की स्वतन्त्रता प्रदान करना।
   (iii) सभी सदस्यों के विचारों को ध्यान से सुनना और कार्य क्षेत्र में उन्हें सलाह देना।
   (iv) सभी सहयोगियों को क्रियाशील और सजग बनाने का प्रयत्न करना।
   (v) सभी कार्यकर्ताओं की नेतृत्व शक्ति का विकास करने हेतु प्रयत्न करना।

5. **व्यावसायिक** शैक्षिक पर्यवेक्षण में केवल उन्हीं बातों पर अधिक बल देना चाहिए जो शैक्षिक व्यवसाय और शिक्षा के उद्देश्यों से सम्बन्धित हैं। पर्यवेक्षण में सम्मिलित होने वाले समस्त सहयोगियों को अपने उत्तरदायित्वों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। शैक्षिक पर्यवेक्षण ऐसा होना चाहिए जिससे विद्यालय में वातावरण निर्देशन, शिक्षक की दशा, नियम आदि में पूरा सुधार हो सके।

6. **सुधारात्मक** पर्यवेक्षण का कोई भी कार्य ऐसा नहीं होना चाहिए जो आलोचना करने वाला या अधिकार दिखाने वाला हो। जहाँ कहीं त्रुटि दिखाई दे वहाँ पर्यवेक्षक को सहानुभूतिपूर्वक समुचित सुझाव एवं निर्देशन प्रदान किए जाने चाहिए जिससे कि पर्यवेक्षण सम्बन्धी कार्यों में सुधार किया जा सके।

7. **सृजनात्मकता पर आधारित** शैक्षिक पर्यवेक्षण रचनात्मक के साथ-साथ सृजनात्मक भी होना चाहिए। पर्यवेक्षण ऐसा होना चाहिए जिसकी प्रेरणा द्वारा छात्र तथा शिक्षक अपनी अद्वितीय शक्ति प्रकट कर सकें। शैक्षिक पर्यवेक्षण की दृष्टि अत्यधिक सार्थक, व्यापक और ठोस होनी चाहिए। पर्यवेक्षण इस प्रकार से प्रेरणा दे, ताकि छात्र विद्यालय में सौर ऊर्जा, विद्युत के नवीन संयन्त्र, शोध की नई दिशा की ओर कार्य कर सकें। शिक्षकों का विवेक, तर्क और उन्हें नवीन कार्यों में लगाने का उत्तरदायित्व, शैक्षिक पर्यवेक्षण पर निर्भर होता है।

स्मरणीय तथ्य

- शाब्दिक अर्थ के अनुसार, पर्यवेक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें पर्यवेक्षक अपनी दिशा समस्याओं का अध्ययन कर उनके समाधान का प्रयास करता है।
- शैक्षिक पर्यवेक्षण से अभिप्राय उस पर्यवेक्षण से है जो शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है विद्यालय के आन्तरिक एवं बाह्य क्रियाकलापों का सही प्रकार मूल्यांकन करके उचित द्वारा शैक्षिक विकास हेतु प्रेरित करना शैक्षिक पर्यवेक्षण है।
- निरीक्षण के प्रत्यय का उद्भव इंग्लैण्ड में हुआ, जो आगे चलकर पर्यवेक्षण के स्वरूप में होता चला गया।
- भारत में निरीक्षण के इतिहास का आरम्भ **वुड का घोषणा-पत्र** (1954) की संस्तुति होता है।
- आधुनिक पर्यवेक्षण सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक प्रक्रिया पर निर्भर करता है शैक्षिक पर्यवेक्षक को निरीक्षण रूप में समझा जाता था। इस प्रत्यय के अनुसार स्वेच्छाचारी, हठधर्मी और व्यावहारिक होता था।
- शैक्षिक पर्यवेक्षण के आधुनिक उपागम अधिक लोकतान्त्रिक, अधिक मानव सम्बन्ध उन्मुख अधिक नव-प्रवर्तनशील हैं। यह सहयोग और टीमवर्क पर निर्भर करता है
- **अनरूह** और **टर्नर** के अनुसार, पर्यवेक्षण को तकनीकी सेवा प्रदान करने के रूप में देखा जा जिनका सम्बन्ध अधिगम और छात्रों की वृद्धि से है।
- पर्यवेक्षण में नेतृत्व के गुणों से तात्पर्य है समूह की आवश्यकताओं को पहचानना और उन्हें करना, स्वीकारात्मक तरीके से व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता, समूह कार्य व्यक्तिगत कार्यों को सुगम बनाना और सहयोगात्मक व्यवहार रखना।
- पर्यवेक्षक पारस्परिक व्यवहार कौशल द्वारा लक्ष्यों की प्राप्ति करते हैं। इस कौशल में निर्णय कौशल, संगठन सम्बन्धी कौशल, संचार कौशल, प्रतिनिधि कौशल और मूल्यांकन कौशल शामिल हैं।